पाठ 18
वीर अभिमन्यु

आइए सीखें:- • महाभारत की कथा से परिचय। • वीरता की भावना जाग्रत करना। • विलोम शब्द • विशेषण • विशेष्य • मुहावरों का अर्थ एवं वाक्य प्रयोग • सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्य।

वीरअभिमन्यु की मूल कथा का स्रोत महाभारत है। इस कथा में अभिमन्यु की वीरता और साहस का परिचय देखने को मिलता है। महाभारत पाण्डवों और कौरवों के मध्य हुआ युद्ध था।

महाभारत का युद्ध हो रहा था। अर्जुन अपने रथ में बैठकर युद्धभूमि के अंतिम छोर पर हो रहे युद्ध का नेतृत्व करने चले गए थे। कौरवों की ओर से गुरु द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह रचने की घोषणा कर दी थी। चक्रव्यूह की इस घोषणा से युधिष्ठर बहुत चिन्तित थे। पास ही भीम, नकुल और सहदेव भी माथे पर हाथ रखे बैठे थे। वे सोच रहे थे कि आज जब अर्जुन यहाँ नहीं हैं तो युद्ध का संचालन कौन करेगा?

बात यह भी कि पाँचों पांडवों में अर्जुन के अतिरिक्त कोई चक्रव्यूह को भेदना नहीं जानता था। अर्जुन इस समय थे नहीं, इसलिए महाराज युधिष्ठर, भीम, नकुल, सहदेव-सभी चिन्तित हो रहे थे। हार जीत का प्रश्न था। विपक्ष की चुनौती थी। कौन कौशल से रचे चक्रव्यूह को भेद कर शत्रुओं का सामना करेगा? यही सब सोचकर महाराज युधिष्ठर चिन्तामग्न थे। भीम अपनी गदा से चक्रव्यूह के टुकड़े-टुकड़े करने का दावा कर रहे थे। परन्तु यह काम इतना आसान न था। चक्रव्यूह में प्रवेश करना ही कठिन था।

इतने में बाहर से कुछ शोर सुनाई पड़ा और दौड़ता हुआ अभिमन्यु शिविर में घुसा। उसने पहले महाराज युधिष्ठर को प्रणाम किया, फिर औरों को। महाराज युधिष्ठर ने आशीर्वाद दिया और पूछा, ''अभिमन्यु, तुम इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हो? क्या बात है?''

''आज मैं युद्ध करने जाऊँगा। मुझे आज्ञा दीजिए, महाराज!'' अभिमन्यु ने हाथ जोड़कर कहा। भीम उत्तेजित होकर बोले, ''तुम! युद्ध करने जाओगे! आज का युद्ध तो बहुत भयंकर है। जानते हो, गुरू द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की है और उसे भेदना तुम्हारे पिता अर्जुन के अतिरिक्त और किसी को नहीं आता। तुम तो अभी बालक हो, पुत्र।''

''मुझे चक्रव्यूह भेदना आता है महाराज! आप आज्ञा तो दीजिए। पिताजी एक बार माँ को चक्रव्यूह भेदने की विधि बता रहे थे। मैंने गर्भ में रहते हुए उसे सुन लिया था। हाँ, चक्रव्यूह से निकलने की विधि मैं नहीं

शिक्षण संकेत :- • शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श-वाचन किया जाए। • महाभारत की कथा संक्षेप में बताएँ। • कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करवाया जाए। • अभिमन्यु की वीरता पर चर्चा की जाए।

सुन सका था क्योंकि माँ पिताजी की बातें सुनते-सुनते सो गई थी। किन्तु उससे क्या? जब उसमें घुस जाऊँगा, उसको भेद ही दूँगा तो फिर निकलना कौन कठिन बात होगी!'' अभिमन्यु ने बड़े ओज भरे शब्दों में कहा।

युधिष्ठर बोले, ''तुम बालक हो-केवल सोलह वर्ष के! इतने शूरवीर गुरु द्रोणाचार्य का सामना करने के लिए हम तुम्हें कैसे भेज सकते हैं?''

नकुल और सहदेव ने कहा, ''महाराज! और उपाय ही क्या है? अभिमन्यु को आज्ञा दीजिए। हम इसकी रक्षा के लिए इसके साथ ही रहेंगे।''

''हाँ, हाँ! और मैं भी गदा लिए इसके साथ चक्रव्यूह में घुस जाऊँगा,'' भीम ने गदा घुमाते हुए कहा।

युधिष्ठर करते भी क्या! वे बोले-तो फिर ठीक है, आज तुम्ही सब युद्ध करने जाओ। पर मुझे हर क्षण, हर पल का समाचार देते रहना।

अभिमन्यु सैनिकों के साथ युद्धभूमि में पहुँचा ही था कि रणभेरी बज उठी। बस! फिर क्या था? चारों ओर से दोनों सेनाएँ एक दूसरे पर टूट पड़ीं। अभिमन्यु शत्रुओं को मारता-काटता आगे बढ़ता जा रहा था। उसके भीषण बाणों की चोट से बड़े -बड़े वीर आहत और भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे।

सामने ही चक्रव्यूह का प्रथम द्वार था, जिसकी रक्षा जयद्रथ कर रहा था। अभिमन्यु ने एक बाण जयद्रथ को मारा और चक्रव्यूह में घुस गया। द्वार के रक्षक पीछे हट गए। सोचने का समय न था और न पीछे मुड़कर देखने का। अभिमन्यु का रथ चक्रव्यूह के द्वार के पार निकल गया। भीम, नकुल और सहदेव द्वार पर ही युद्ध करते रह गए। वे व्यूह के भीतर न घुस सके।

दूसरे द्वार पर स्वयं गुरु द्रोणाचार्य व्यूह का संचालन कर रहे थे। वे चकित से अकेले बालक को देख

ही रहे थे कि अभिमन्यु ने अपने बाण से उनका धनुष काट दिया और फिर तीव्रगति से उसके सारथी ने रथ को तीसरे द्वार पर ला खड़ा किया। अभिमन्यु जिस वेग से अपने चारों ओर बाण छोड़ रहा था, उससे शत्रुओं का उत्साह एकदम मन्द पड़ गया। उस वीर बालक का सामना करने में कर्ण और दुर्योधन जैसे वीर भी असमर्थ रहे।

जब अभिमन्यु छठा द्वार भी पार कर गया तो विपक्ष को चिन्ता हुई। इतना बड़ा चक्रव्यूह रचकर भी सोलह वर्ष के बालक से कहीं उन्हें मुँह की न खानी पड़े! और तब दुर्योधन की सलाह से सातों द्वारों के योद्धा मिलकर अभिमन्यु पर टूट पड़े। यह देखकर अभिमन्यु का सारथी बोल उठा, ''यह अन्याय है। मैं तीव्रगति से रथ को मोड़कर तुम्हें सुरक्षित बाहर ले चलता हूँ। कल अर्जुन के साथ आएँगे और युद्ध करेंगे।''

''नहीं, नहीं, अर्जुन का पुत्र होकर मैं युद्धभूमि से पीठ नहीं दिखा सकता। '' तुम रथ को सातों महारथियों के बीच में घुमाते रहो और फिर देखो मेरा कौशल।'' अभिमन्यु बोला।

सारथी रथ को घुमाने लगा। अभिमन्यु के तीरों के प्रहार से शत्रुओं के छक्के छूट रहे थे, पर तभी एक तीर उसके धनुष की डोरी को काटता हुआ निकल गया। अभिमन्यु ने धनुष फेंक दिया और तलवार निकाल कर शत्रुओं का मुकाबला करने लगा। उसी समय कर्ण का एक बाण सारथी की छाती को भेदता हुआ निकल गया। सारथी गिर पड़ा।

अभिमन्यु रथ से कूद पड़ा और शत्रुओं पर वार करने लगा, किन्तु दुर्भाग्य से उसकी तलवार के दो टुकड़े हो गए। एक तीक्ष्ण बाण उसके कन्धे में लगा। अभिमन्यु फिर भी विचलित न हुआ। उसने अपने रथ का पहिया उठा लिया और उसे घुमाता हुआ अपनी रक्षा करने लगा। इसी बीच सातों महारथियों ने अभिमन्यु को घेर लिया।

कहाँ सात-सात वीर महारथी और कहाँ सोलह वर्ष का अभिमन्यु! परन्तु उसके साहस और शौर्य का कोई मुकाबला न था! फिर भी वह वीर बालक इनका सामना करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। अभिमन्यु वीरगति को अवश्य प्राप्त हुआ परन्तु विपक्षियों के मन को जीत कर।

बोध प्रश्न

1. निम्नांकित शब्दों के अर्थ पुस्तक में दिए शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

चिन्तित -	.....	असमर्थ-	.....
नेतृत्व-	.....	मुकाबला-	.....
भयंकर-	.....	विचलित-	.....
आहत-	.....	चक्रव्यूह-	.....
शूरवीर-	.....	भीषण -	.....
वीरगति-	.....	तीव्रगति-	.....
रणभेरी-	.....	महारथी-	.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) महाभारत का युद्ध किस-किस के बीच हुआ था?

(ख) पाँच पाण्डवों के नाम लिखिए?

(ग) चक्रव्यूह रचने की घोषणा किसने की थी?

(घ) अभिमन्यु कौन था?

(ङ) चक्रव्यूह के प्रथम द्वार की रक्षा कौन कर रहा था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) अर्जुन कहाँ गए थे?

(ख) युधिष्ठिर एवं उनके भाई क्यों चिन्तित थे?

(ग) अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदना कैसे सीखा था?

(घ) युधिष्ठिर ने अभिमन्यु को युद्ध में जाने की आज्ञा क्यों दी?

(ङ) अभिमन्यु ने क्यों कहा-आज मैं युद्ध करने जाऊँगा?

(च) अभिमन्यु चक्रव्यूह में कैसे घुसा?

(छ) अभिमन्यु वीरगति को कैसे प्राप्त हुआ?

4. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. पाँच पाण्डवों में चक्रव्यूह भेदना.....को आता था।

(अर्जुन/सहदेव)

2. चक्रव्यूह को भेदना बहुत .....था।

(कठिन/आसान)

3. अभिमन्यु चक्रव्यूह.....की विधि नहीं जानता था।

(भेदन/निकलने)

4. चक्रव्यूह के दूसरे द्वार का संचालन .....कर रहे थे।

(द्रोण/जयद्रथ)

5. किसने किससे कहा ?

1. तुम बालक हो। इतने शूरवीर गुरु द्रोणाचार्य का सामना करने के लिए हम तुम्हें कैसे भेज सकते हैं?

2. मैं भी गदा लिए उसके साथ चक्रव्यूह में घुस जाऊँगा।

3. मैं अर्जुन का पुत्र होकर युद्धभूमि से पीठ नहीं दिखा सकता।

4. तुम रथ को सातों महारथियों के बीच घुमाते रहो, फिर देखो मेरा कौशल।

भाषा अध्ययन

1. निम्न लिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

नेतृत्व, द्रोणाचार्य, युधिष्ठिर, दु:शासन, तीक्ष्ण, प्रहार, दुर्भाग्य।

2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध मानक रूप लिखिए-

ऊतेजीत, चकरबूह, चूनोती, आसमरथ, बीपद्वीयाँ, युधभूमि, विपक्षीयों, असमरथ

3. शुद्ध उच्चारण कीजिए

दु:शासन, अत:, प्रात: काल, प्राय:, वस्तुत:, अंत:करण,

4. लिखिए-

अभिमन्यु के बारे में दो अनुच्छेद लिखिए

5. वर्ग 'क' में कुछ शब्द दिए गए है और वर्ग 'ख' में उन शब्दों के विलोम शब्द दिए हैं। इनकी सही जोड़ी बनाइए-

वर्ग (क)	वर्ग (ख)
हार	विपक्ष
पक्ष	सौभाग्य
सरल	जीत
न्याय	असमर्थ
दुर्भाग्य	अन्याय
समर्थ	कठिन

4. 'मग्न' और 'वीर' शब्द जोड़कर उदाहरण के अनुसार नए शब्द लिखिए।

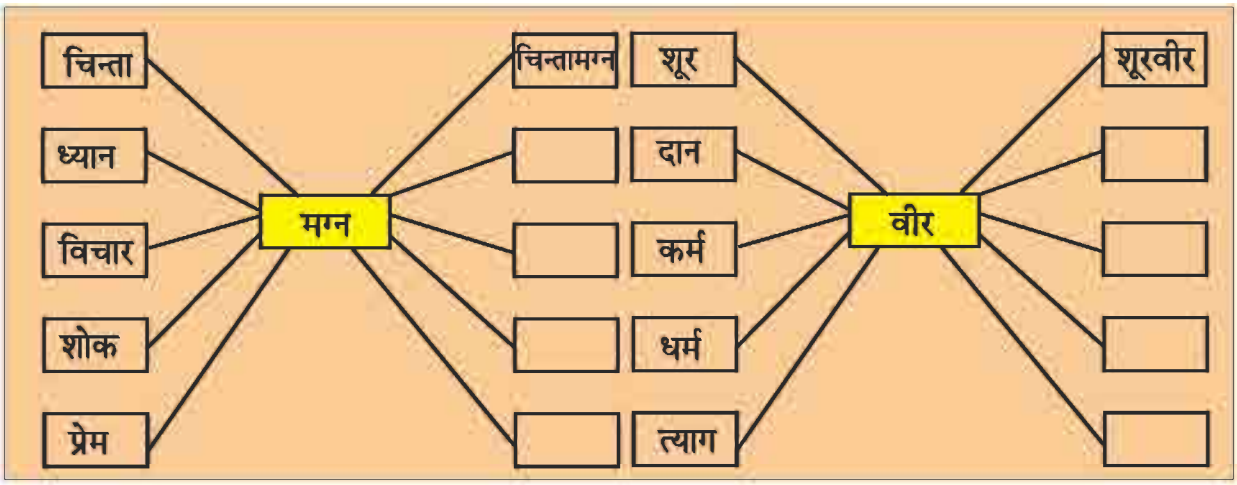

5. नीचे लिखे शब्दों के सामने विशेषण और विशेष्य शब्द लिखिए-

तीक्ष्ण,	.....	तीव्र	.....	वर्ष,	.....
स्थान,	.....	सच्चा,	.....	सेवक	.....
पाण्डव,	.....	गति,	.....	वाण	.....
सोलह	.....	सुरक्षित	.....	ईमानदार	.....

6. इस पाठ में आए वीरता-सम्बन्धी विशेषण शब्द चुनो।

7. मुहावरों के अर्थ समझकर, उनका वाक्यों में प्रयोग करो

वीरगति को प्राप्त होना	=	युद्ध में मृत्यु होना	.....
मुँह की खाना	=	हार जाना	.....
माथे पर हाथ रखना	=	चिंता करना	.....
छक्के छूटना	=	हिम्मत हारना	.....
टूट पड़ना	=	आक्रमण करना	.....
पीठ दिखाना	=	भाग जाना	.....
काम तमाम करना	=	समाप्त कर देना	.....

8. निम्नलिखित मुहावरों के सामने उनके अर्थ दिए गए हैं उनमें एक ही अर्थ सही है। सही अर्थ पर गोला लगाइए-

मुहावरे	अर्थ
(क) पेट में चूहे कूदना =	पेट दुखना प्यास लगना भूख लगना
(ख) मिट्टी के मोल =	बहुत मँहगा उधार लेना बहुत सस्ता
(ग) जी चुराना =	मन न लगना भाग जाना रूपए चुराना
(घ) फूले न समाना	बहुत गुस्सा होना बहुत खुश होना रूठ जाना

आइए, जानिए-

- जिस वाक्य में एक कर्ता और एक क्रिया होती है, इन्हें साधारण या सरल वाक्य कहते हैं। जैसे -राम पुस्तक पढ़ता है।
- जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य केअतिरिक्त उसके अधीन दूसरा उप वाक्य होता है उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं। इसमें एक से अधिक क्रियाओं का प्रयोग होता है। जैसे- प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के प्रत्येक बच्चों को शिक्षित होना चाहिए
- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक ऐसे उपवाक्य होते हैं, जो अपने अलग -अलग अर्थ रखते हैं। तथा किसी के अधीन नहीं होते, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे मामाजी आए और वे कुछ नहीं लाए।

10. **निम्नलिखित वाक्यों के सामने कोष्टक में वाक्यों के प्रकार लिखे हैं। आप सही प्रकार पर सही का निशान लगाइए-**

(क) आज मैं युद्ध करने जाऊँगा। **(मिश्रित, साधारण, संयुक्त)**

(ख) अभिमन्यु के एक तीक्ष्ण बाण लगा फिर भी वह विचलित नहीं हुआ।

(साधारण, मिश्र, संयुक्त)

(ग) द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह रचना की घोषणा की थी। **(संयुक्त , मिश्र, साधारण)**

(घ) अभिमन्यु कुछ सैनिकों के साथ पहुँचा था कि रणभेरी बज उठी। **(साधारण, मिश्र, संयुक्त)**

(ङ) अभिमन्यु युद्ध में रथ से कूद पड़ा और शत्रुओं पर वार करने लगा। **(साधारण, मिश्र, संयुक्त)**

11. एक बार लाल बहादुर शास्त्री अपने मित्रों के साथ नाव में बैठकर गंगा नदी के पार मेला देखने गए। वापसी के समय उन्होंने देखा कि उनके पास गंगा पार करने के लिए नाव का किराया नहीं है। यह बात उन्होंने अपने मित्रों को नहीं बतलाई और न उन्होंने मित्रों से कुछ पैसों की सहायता ही माँगी। वे जानबूझकर पीछे रह गए। जब सभी मित्र नाव में बैठ कर चले गए तब उन्होने तैर कर गंगा नदी पार की। इस प्रकार वे अपने बलबूते पर घर पहुँचे।

अ) उपर्युक्त गद्यांश से संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया शब्दों को छाँटकर अलग-अलग लिखिए

ब) उपर्युक्त गद्यांश में से साधारण वाक्य और मिश्रित वाक्य छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. शिक्षक की सहायता से 'महाभारत' के वीरता वाले रोचक प्रसंग पढ़िए/सुनिए और कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
2. आपके आस-पास के किसी 'वीर बालक' की वीरता की बातें कक्षा में सुनाइए।
3. अपने जीवन में घटित किसी साहस से पूर्ण प्रसंग को अपने साथियों को बताइए।
4. इस कहानी का जो भाग तुम्हें सबसे अच्छा लगा, उसे कक्षा में उच्च स्वर में पढ़िए।
5. महाभारत की कहानी पढ़िए और उसे कक्षा में सुनाइए।
6. महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी कौन थे जानिए और परिवार में चर्चा करिए।